अध्याय 4

पौलुस द्वारा बचाव और असहमति

कुरिन्थ की कलीसिया में विभाजन उत्पन्न हो रहे थे। मानव ज्ञान पर अत्यधिक बल दिए जाने के कारण उपद्रव उत्पन्न कर दिए गए। पौलुस ने अपने पाठकों को फटकार लगाई और उन्हें चेतावनी दी कि वे उस सुसमाचार की ओर लौट आएँ जिसे उन्होंने कुछ वर्ष पूर्व ही सुना था।

विभाजनों के सम्बन्ध में उसने एक कठिन कार्य का सामना किया परन्तु कुछ अन्य विषयों का भी सामना करने की आवश्यकता थी। इसने उसे व्यक्तिगत रुप से शामिल कर लिया। कुछ लोग पौलुस के अधिकार का विरोध कर रहे थे। परिणामस्वरुप प्रेरित को, प्रभु के साथ अपने सम्बन्ध के विषय में और कुरिन्थ की कलीसिया के साथ स्वयं के निरन्तर सम्बन्ध के विषय में कुछ कहने के लिए बाध्य होना पड़ा।

इस समस्या के प्रति पौलुस की पहुँच आज की कलीसिया के लिए एक स्पष्ट अर्थ रखती है। सामान्य रुप में, सच के लिए प्यास होना तब सहायक है जब सच की खोज करने वाला अपने विषय के प्रति निष्पक्ष हो और बिना किसी पूर्वधारणा के इसकी जाँच करे। फिर भी इस प्रकार की स्वतन्त्रता उस समय एक भार बन जाती है जब परमेश्वर के विषय में सच की खोज की जाती है और परमेश्वर के साथ एक व्यक्ति अपने सम्बन्ध की खोज करता है।

एक व्यक्ति के जीने के तरीके से यह जानकारी मिलती है कि उसने स्वयं के जीवन में परमेश्वर की सच्चाई को किस प्रकार स्वीकार किया है। मानव होने का अर्थ क्या है, एक व्यक्ति को दूसरे जन के साथ किस प्रकार का व्यवहार रखना चाहिए, परमेश्वर क्या चाहता है, और जीवन कहाँ जा रहा है, इसके विषय में खोजबीन करने के लिए जो प्रश्न किए जाते हैं वे पूर्ण रुप से अलग दृष्टिकोण से नहीं पूछे जा सकते। इन प्रश्नों में एक व्यक्तिगत समर्पण शामिल है। एक आत्मिक अगुवे की भूमिका में विषय से अलग होना न केवल प्रेरणा देने में असफल हो जाने की स्थिति है परन्तु यह अक्षम्य भी है।

कुरिन्थ के लोगों को लिखे गए इस पत्र में पौलुस का उन सब वस्तुओं के प्रति समर्पण देखते हैं जो मसीह को महिमा देती हैं, वे सब जिनका परिणाम परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप होगा। प्रेरित यह जानता था कि कलीसिया किस प्रकार व्यक्तिगत रुप से आज्ञाकारिता में उसके साथ और मसीह में आशा के साथ जुड़ाव रखती है। हालांकि ऐसा करते हुए प्रेरित को यह अच्छा नहीं लग रहा था फिर भी अपने आलोचकों को सम्बोधित करना और सेवा के बचाव के लिए खड़ा होना

आवश्यक था।

सेवकत्व बनाम हठी न्याय (4:1-5)

[1]मनुष्य हमें मसीह के सेवक और परमेश्वर के भेदों के भण्डारी समझे। [2]फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो। [3]परन्तु मेरी दृष्टि में यह बहुत छोटी बात है कि तुम या मनुष्यों का कोई न्यायी मुझे परखे, वरन् मैं स्वयं अपने आप को नहीं परखता। [4]क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरता, क्योंकि मेरा परखनेवाला प्रभु है। [5]इसलिये जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो: वही अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा, और मनों के अभिप्रायों को प्रगट करेगा, तब परमेश्वर की ओर से हर एक की प्रशंसा होगी।

आयत 1. आरम्भ में पौलुस ने स्वयं को और अपुल्लोस को "सेवक" (3:5) कहा; परन्तु उस उदाहरण में उसने एक बहुत ही सामान्य शब्द διάκονοι *(डाईकोनोई)* का चुनाव किया, यह एक ऐसा शब्द है जो 4:1 में "सेवक" (ὑπηρέται, *ह्युपिरीटाई)* के लिए प्रयोग में लाए गए शब्द से कुछ अलग लिए गए हैं। बाद में लिया गया यूनानी शब्द कभी-कभी किसी राजकीय अधिकारी अथवा किसी चिकित्सक के सहायक के लिए प्रयोग में लाया जाता है। पौलुस की प्रथम मिशनरी यात्रा के आरम्भ में, यूहन्ना के साथ मरकुस, और बरनाबस के साथ एक "सहायक" (ὑπηρέτης, *ह्युपिरीटिस;*[1] प्रेरितों 13:5) के रुप में रहा। यह एक निचले स्तर का पद था। जिस प्रकार से पौलुस ने इस शब्द का यहाँ प्रयोग किया उससे यह संकेत मिलता है कि वह अथवा अपुल्लोस स्वयं के लिए एक सहायक से अधिक किसी प्रकार का कोई स्तर नहीं चाहते थे। ये दोनों प्रभु यीशु मसीह के काम में सहायक थे।

पौलुस और अपुल्लोस दोनों ही **सेवक** थे; उन्होंने अपने सेवा कार्य को गम्भीरता से लिया। प्रभु के सहायक होने के कारण वे उसके **भण्डारी** (οἰκονόμοι, *ओइकोनोमोई)* भी थे जो अपने स्वामी की दी हुई आज्ञा का पालन कर रहे थे। यीशु ने उन्हें कुछ ज़िम्मेदारी दी थी। मसीह की सेवकाई में कुरिन्थ के मसीहियों में उनकी सेवकाई एक विशेष कार्य था। वे लोग सेवक थे परन्तु साथ ही **परमेश्वर के भेदों के** भण्डारी भी थे। "भेदों" से पौलुस का क्या अर्थ है, इस बात को इफ़िसियों 3:4-7 में अच्छी प्रकार से परिभाषित किया गया है:

> जिससे तुम पढ़कर जान सकते हो कि मैं मसीह का वह भेद कहाँ तक समझता हूँ। जो अन्य समयों में मनुष्यों की सन्तानों को ऐसा नहीं बताया गया था, जैसा कि आत्मा के द्वारा अब उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं पर प्रगट किया गया है। अर्थात् यह कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा अन्यजातीय लोग मीरास में साझी, और एक ही देह के और प्रतिज्ञा के भागी हैं। मैं परमेश्वर के अनुग्रह के उस दान के अनुसार, जो उसकी सामर्थ्य के

प्रभाव के अनुसार मुझे दिया गया, उस सुसमाचार का सेवक बना।

इस सन्दर्भ में किसी प्रकार के यूनानी रहस्यमयी धर्मों के बारे में सुझाव नहीं दिया गया है, जबकि हो सकता है कि कुरिन्थ जैसे शहर में अन्यजाति पृष्ठभूमि के पाठक, डिमीटर जैसे स्थानीय यूनानी ईश्वरों और इसिस जैसे आयात किए गए ईश्वरों के साथ "रहस्यमयी" के विचारों से अच्छी प्रकार से पहचान रखते हों।

आयत 2. कुरिन्थ अथवा अन्य स्थानों में पौलुस की सेवकाई में कुछ भी शामिल रहा हो, उसका प्रथम समर्पण प्रभु के प्रति था जिसने उन्हें मूल्य देकर ख़रीद लिया था। पौलुस ने अपनी सेवकाई का वर्णन नहीं किया परन्तु उसने इसके प्रति एक दृढ़ निश्चय को अवश्य प्रकट किया: ... **फिर यहाँ भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो।** एक भण्डारी एक विश्वासयोग्य सेवक होता है जिसे सम्पत्ति पर ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है। वह स्वामी नहीं था परन्तु स्वामी की अनुपस्थिति में व्यवसाय के संचालन का ज़िम्मेदार था।

पौलुस के लिखे जाने से कुछ दो दशक पूर्व, आत्मिक सच्चाई की शिक्षा देने में यीशु को एक भण्डारी की भूमिका प्राप्त थी। उसने भौतिक सम्पत्ति के साथ एक व्यक्ति के सम्बन्ध में एक दृष्टान्त देते हुए एक भण्डारी की कहानी सुनाई जो कि उस स्वामी के साथ धोखा करते हुए पकड़ा गया जिसने उसे भरोसे के पद पर नियुक्त किया था (लूका 16:1-9)। एक अन्य अवसर पर प्रभु ने यह कहते हुए न्याय की चेतावनी दी, "वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए ... ?" (लूका 12:42)। देखभाल करने के लिए जो भण्डरीपन का कार्य उसे सौंपा गया था उसके विषय में मसीह के साथ अपने सम्बन्ध को पौलुस समझ गया था (गला. 1:15, 16)। स्वयं की क्षमता में प्रेरित वास्तव में भण्डारी थे। फिर भी एक विस्तृत रुप में सब प्रकार के मसीही जीवन के लिए भण्डारीपन एक सहायक बिंदु है। पतरस ने प्रत्येक विश्वासी को यह आदेश दिया कि वे परमेश्वर द्वारा दी गई भण्डारीपन की ज़िम्मेदारी के प्रति विश्वासयोग्य रहें (1 पतरस 4:10)।

आयत 3. कुछ लोगों ने ऊपरी तौर पर यह माना कि पौलुस की अयोग्यताओं को जानने के द्वारा वे सही हैं। वे लोग उसकी शिक्षा के तत्वों को चुनौती दे रहे थे; उसके स्वभाव के विषय में उनकी आलोचनाओं का और अधिक उत्तर दिए जाने की आवश्यकता थी। वे यह सोचते थे कि पौलुस ठीक प्रकार से बोल नहीं पाता था अथवा उसका रुप और उसके द्वारा तर्क-वितर्क करना, आपस में मेल नहीं खाते थे। सम्भव है कि कुछ लोग पौलुस के विषय में कुछ व्याकुल थे कि उनके परिवारों और पड़ोसियों में से उनके पसन्द के कूतर्की लोगों के साथ पौलुस की तुलना की गई।

प्रेरित ने अपने मौखिक आलोचकों को निचले स्तर के तरीकों में शामिल पाया। उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि उनके द्वारा किया गया न्याय **एक बहुत ही छोटी बात है।** वे पौलुस को बिल्कुल भी चिन्तित नहीं कर पाए। बेन विदरिंगटन III ने इसका वर्णन इस प्रकार किया:

उनके मन में यह उनका अधिकार था कि वे पौलुस का न्याय करें जैसा कि श्रोता, दक्ष लोगों के विषय में और उनके भाषण के विषय में करते थे। न्याय के सन्दर्भ में इस बात का इतना अर्थ नहीं है कि पौलसु अपनी सेवकाई की कार्यविधि के साथ-साथ, अपने शब्दों में और व्यक्तिगत उपस्थिति में, परमेश्वर का *वैध* सेवक था या नहीं। संक्षिप्त में व्याख्यान, विद्या के अनुसार वह एक अनाड़ी व्यक्ति था।[2]

पौलुस के शब्दों से यह निष्कर्ष देना सही नहीं है कि वह अपनी सेवकाई के विषय में अन्य लोग के विचारों के प्रति लापरवाह था। व्यक्तिगत रुप से जो भी सेवा की जाती है उसके विषय में बताया जा सकता है और निश्चित रुप से एक प्रेरित होने के कारण पौलुस के साथ भी ऐसा ही था। इस प्रकार का मानदण्ड उसके विरोधियों ने उसका न्याय करने के लिए किया जिसके कारण पौलुस को परेशानी उठानी पड़ी। उसकी शिक्षा के तरीके और शैली की आलोचना उसके आलोचकों ने गहराई के साथ की। **मानवीय अदालत** के क्षेत्र में इस प्रकार का विवरण महत्वपूर्ण हो सकता है परन्तु सुसमाचार के प्रचार के विषय में ऐसा नहीं है। प्रेरित ने कहा, **वरन् मैं स्वयं अपने आप को नहीं परखता**। पौलुस, सन्देश की प्रस्तुति मात्र प्रभु के न्याय को ध्यान में रखकर ही करता था।

आयत 4. क्योंकि मेरा मन मुझे किसी बात में दोषी नहीं ठहराता, इन शब्दों में निडरता प्रकट होती है। ऐसे अनेक लोग हैं जो कि अपनी कमज़ोरियों के मूल्यांकन पर कुछ आलोचनाएँ प्रस्तुत करते हैं। पौलुस स्वयं के दोषरहित होने का दावा नहीं करता। साथ ही अपनी ईमानदारी के बचाव को लेकर उसमें झिझक नहीं थी। परमेश्वर के सम्मुख अपने कर्तव्य के मामले में सत्य के विषय में अपनी प्रस्तुति और स्वयं मसीही आचरण का नमूना होने के कारण पौलुस बिना किसी लज्जा के अपने विरोधियों का सामना कर पाया। 4:16 में उसने लिखा, “इसलिये मैं तुम से विनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलो” (देखें 11:1)। पौलुस ने पाप को खारिज नहीं किया अथवा उसे हल्का नहीं लिया। उसने यह कहते हुए अनैतिक अथवा कपटी आचरण को क्षमा करने से इंकार किया, “मैं मात्र एक मनुष्य हूँ।” कोई भी जन यह नकार नहीं सकता कि पौलुस ने उनके सम्मुख एक अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया था।

उसके भाषण देने के गुणों के विषय में पौलुस स्वयं को नहीं परखता परन्तु परमेश्वर के प्रति अपनी विश्वासयोग्यता के प्रति वह अडिग था। स्वयं के जीवन के लिए एक निर्देशक के रुप में उसने परमेश्वर के वचन को गम्भीरता से लिया। कलीसिया उस समय कष्ट झेलती है जब मसीही शिक्षक किसी एक प्रकार का व्यवहार रखते हैं तथा कुछ और ही सिखाते हैं। फिर भी पौलुस सचेत था। जिस जीवन की उसने घोषणा की और जो जीवन उसने बचाए उनके बीच में उसने किसी प्रकार की भिन्नता नहीं देखी। फिर भी प्रेरित ने किसी प्रकार की भूल नहीं होने का दावा नहीं किया। मात्र परमेश्वर के सम्मुख उसका न्याय किया जाएगा अथवा उसका खण्डन किया जाएगा: **मेरा परखनेवाला प्रभु है**, ऐसा उसने कहा।

किसी भी स्थिति में पौलुस के आलोचक उसका न्याय करने के लिए सुसज्जित थे।

आयत 5. जब पौलुस ने कुरिन्थ के मसीहियों को यह सुझाव दिया, **इसलिये जब तक प्रभु न आए, समय से पहले किसी बात का न्याय न करो**, तब वह विभिन्न प्रकार के न्यायों को सम्बोधित कर रहा था। सभा के कुछ सदस्य एक न्यायी के विशेष अधिकारों पर उन मामलों में अनुमान लगा रहे थे जिनमें उनको न तो कोई अधिकार था और न ही योग्यता थी। यीशु ने अपने पीछे चलने वाले लोगों को चेतावनी दी कि वे अन्य लोगों के विचारों अथवा हृदय की बातों पर दोष न लगाएँ (मत्ती 7:1-5; देखें याकूब 4:11)। फिर भी प्रेरित ऐसा नहीं कह रहा था कि सब प्रकार के न्याय तब तक के लिए खारिज कर दिए जाएँ जब तक कि प्रधान स्वर्गदूत अपनी तुरही न बजा दे। कुरिन्थ के नाम अपने पत्र की समाप्ति से पूर्व वह उनसे आग्रह करता है कि वे उनमें ऐसे एक सदस्य का न्याय करें जो कि अपने पिता की पत्नी के साथ रह रहा था (5:1-5), उनके बीच उत्पन्न झगड़ों का न्याय करें (6:5), और अनैतिक आचरण की पहचान करें और उसे अस्वीकार करें (देखें 6:15)।

जब प्रभु आएगा तब पृथ्वी का समय समाप्त हो जाएगा और मसीह **अन्धकार की छिपी बातें ज्योति में दिखाएगा। मनुष्य के हृदय के विचारों को प्रकट करने के लिए** मसीह एकमात्र जन है जो कि योग्य है। पौलुस ने यह तर्क नहीं दिया कि मसीह के दिखाई दिए जाने का अर्थ है इस युग का अन्त हो जाना और छुड़ाए हुए लोगों के लिए अनन्त जीवन का आरम्भ होना; स्वयं में वह इसे स्पष्टता से देखता है। सन्तों का उठा लिया जाना, पृथ्वी पर मसीह का एक हज़ार वर्ष का राज्य, हर-मगिदोन का युद्ध, इस्राएल के प्रति यहूदी पुनःस्थापन, अथवा यरुशलेम में पुनः निर्मित मन्दिर में याजकों के द्वारा बलिदान चढ़ाया जाने के विषय में रहस्यमयी भेदों पर उसने कुछ नहीं कहा। ये शिक्षाएँ धर्मशास्त्र में नहीं हैं। नया नियम में युगान्त विद्या[3] दो छोर बताती है। (1) अन्त के समय में घटनाएँ इसलिए प्रस्तुत की गई हैं जिससे कि हमें आश्वासन मिले कि परमेश्वर सर्वोच्च है। अपने चुनाव के अन्त की ओर वह संसार को चला रहा है। मनुष्य का समय निकट आ रहा है इस बात का ज्ञान यह स्मरण दिलाता है कि धर्मी जीवन जीना बहुत आवश्यक है। पतरस ने मसीहियों को उत्साहित किया कि वे विचार करें "तुम्हें पवित्र चालचलन और भक्ति में कैसे मनुष्य होना चाहिए" (2 पतरस 3:11)।

पौलुस बनाम अराजक तत्व (4:6-13)

कुरिन्थ की कलीसिया में फूट की धमकी का आधार एक शिक्षक से अधिक दूसरे शिक्षक को पसन्द किया जाना था। ये विश्वासी हठी प्रतिस्पर्धा के कारण झगड़ों में फँसे हुए थे। अपने तथा अपुल्लोस के कार्य के सम्बन्ध को समझाते हुए पौलुस न केवल बिमारी के बारे में बता रहा था परन्तु वह उसके लक्षणों का निदान भी कर रहा था। उनमें उत्पन्न फूट इस बात का प्रमाण था कि उन्होंने

मसीह के आत्मा को सही प्रकार से अपने अन्दर बैठाया नहीं था। क्रूस के प्रति दास होने के भाव से वे कब दूर हो गए यह उन्हें पता ही नहीं चला। उनके लिए कलीसिया, दयापूर्ण प्रेम का एक स्थल होने के स्थान पर एक प्रतियोगिता का क्षेत्र बन गया था। पौलुस ने उनके सम्मुख मसीह का नमूना प्रस्तुत किया था परन्तु उन्होंने अपने सांसारिक आचरण को बनाए रखा।

किसी व्यंग्य से बढ़कर, पौलुस ने कुरिन्थ में आत्मसेवी झगड़ों के साथ प्रेरितों के समर्पण में अन्तर बताते हुए अपने पाठकों को डाँटा। भाइयों ने मसीह को मात्र पौलुस के शब्दों के द्वारा ही नहीं जाना था परन्तु यीशु ने स्वयं के बलिदान और समर्पण के द्वारा भी उन्हें प्रेरित किया था। बिना किसी संकोच के पौलुस ने प्रेरिताई ज़िम्मेदारियों के विषय में लिखा जिन्हें बताना उसके लिए आवश्यक था। प्रेरित के रुप में उसने दक्ष रुप से बोलने के गुणों पर विचार-विमर्श करने का आनन्द नहीं उठाया। उसके हिस्से में कमज़ोरी, भूख, ठंड और कठोर बर्ताव का सामना करना था। कलीसिया के लिए यह आवश्यक था कि वह अहंकारी झगड़ों से और उनके बीच मसीह के अधिक वास्तविक साक्ष्यों के प्रति शिक्षकों के मध्य अर्थहीन तुलनाओं से परे हट जाएँ।

सब लोग एक समान हैं (4:6, 7)

6हे भाइयो, मैं ने इन बातों में तुम्हारे लिये अपनी और अपुल्लोस की चर्चा दृष्टान्त की रीति पर की है, इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना, और एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करना। 7क्योंकि तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है? और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया? और जब कि तू ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है कि मानो नहीं पाया?

आयत 6. यहाँ जो चीज़ें पौलुस ने स्वयं के लिए और अपुल्लोस के लिए **अलंकार के रुप में प्रयोग** में ली हैं वे 3:6-11 में निर्माण करने वाले और किसान की उपमा के समान लगती हैं। फिर भी उपमाओं के द्वारा अर्थ निकालना उस विचार-विमर्श को शामिल करता है जो कि 1:10 में आरम्भ हुआ। निर्माण कार्य और कृषि से लिए गए अलंकारों ने दो शिक्षकों के एक-दूसरे के आपसी सम्बन्ध और पत्र के प्राप्तकर्ता के साथ सम्बन्ध का विवरण दिया (3:4-11)। प्रेरित का उद्देश्य, उनके सिखाने वालों की सेवक होने की मानसिकता और कुरिन्थ में प्रकट की गई प्रतियोगी आत्मा के बीच अन्तर बताना रहा है।

"आलंकारिक रुप से लागू करना" पद यूनानी के शब्द μετασχηματίζω *(मेटास्खेमाटिज़ो)* का अनुवाद करता है। फ्रेडरिक विलियम डेंकर ने पौलुस का विवरण विस्तार में समझाया: "मैंने अपनी इस शिक्षा को अपुल्लोस के विषय में एक प्रदर्शन का रुप दिया है।"[4] पौलुस के आलंकारिक अनुप्रयोग का अन्तर्निहित अर्थ पाठकों के लिए एक निवेदन था कि वे उसे स्वयं में ले लें जो उनके शिक्षकों ने उन्हें दिया। देह में अनेक उपद्रवी बिंदु के रुप में पौलुस और अपुल्लोस के नाम का

प्रयोग करना इन प्रेरितों के लिए अन्याय के समान था। पौलुस और अपुल्लोस के लिए यह अन्याय था कि देह में अनेक उपद्रवी बिंदु उत्पन्न करने के लिए उनके नामों का प्रयोग किया जाए।

पौलुस और अपुल्लोस, पौलुस की तुलना के विषय थे; उसने कैफ़ा (पतरस) का वर्णन नहीं किया। अध्याय 1 के पाठ्यक्रम में 4 तक, "कैफ़ा" शब्द मात्र दो बार (1:12; 3:22) दिखाई देता है, जबकि "अपुल्लोस" शब्द छः बार (1:12; 3:4, 5, 6, 22; 4:6) आता है। अनेक बार नाम आने की तुलना में यह महत्वपूर्ण था कि पौलुस ने "उन लोगों के कारण स्वयं के लिए और अपुल्लोस के लिए जो आलंकारिक शब्द लागू किए गए" वे अपुल्लोस से पूरा सम्बन्ध रखते थे परन्तु उनका कैफ़ा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं था। यह स्पष्ट रुप से देखने में आता है कि पौलुस ने कैफ़ा का परिचय कल्पित उद्देश्य मात्र के लिए किया। जिन लोगों ने किसी प्रकार के एक दल का गठन कर लिया और पौलुस अथवा अपुल्लोस के योद्धा होने का दावा किया, सम्भव है कि उन लोगों ने कैफ़ा अथवा मसीह के निकट एक अतिरिक्त दल का गठन कर लिया हो। इस प्रकार के विभाजनों के लिए कोई क्षमा नहीं थी। "कैफ़ा" के बारे में पौलुस द्वारा वर्णन किया जाना किसी प्रकार का साक्ष्य नहीं देता कि पतरस कुरिन्थ में गया था।

आयत 6 के बाद का भाग गुप्त है। यूनानी का एक अक्षरशः अनुवाद इस प्रकार है: "... कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि लिखे हुए से आगे न बढ़ना।" अनुवादकों ने "से आगे निकल जाना" अथवा "से आगे बढ़ना" जैसे शब्द जोड़े हैं जिससे कि जाना जा सके कि इस पद के अर्थ के विषय में वे क्या विश्वास रखते हैं। यूनानी भाषा में इसलिये कि तुम हमारे द्वारा यह सीखो कि **लिखे हुए से आगे न बढ़ना** (τὸ Μὴ ὑπὲρ ἃ *γέγραπται*, *टू मी ह्युपर हा गिग्राप्टाई),*" एक उपपद τό (*टो*, "अंग्रेज़ी में *the*"), आरम्भ में आने से यह संकेत मिलता है कि यह वाक्यांश एक नारे के रूप में था जिसका उपयोग कलीसिया के कुछ लोग करते थे। सम्भव है कि पौलुस ने इसे कलीसिया के मानने के लिए एक दिशा निर्देशक सिद्धान्त के रुप में परिवर्तित कर दिया हो जिससे कि जब कठिन चुनाव करने हों तब वे इसका प्रयोग करें। NRSV में ऐसा लिखा है "... जिससे कि तुम हमसे इसे कहने के अर्थ को सीख सको, 'लिखे हुए से आगे न बढ़ना।'"

"लिखा हुआ" वाक्यांश का प्रयोग जब पौलुस करता है तो वह किस विषय में बात कर रहा है? क्या उसके कहने का अर्थ पुराना नियम है? क्या उसने उनके लिए एक संक्षिप्त निर्देशात्मक हस्तपुतिका लिखी थी? सम्भव है कि प्रेरित यीशु के मुख से निकली बातों की सूची छोड़ कर गया हो? सम्भव है कि वर्तमान पाठक इन प्रश्नों का उत्तर पूर्ण निश्चितता के साथ न दे पाएँ, परन्तु यह स्पष्ट है कि "लिखा हुआ" वाक्यांश यह प्रमाणित करता है कि शिक्षक, मसीह के सेवक और भण्डारी बनें। वे किसी अधिकारी का अथवा व्याख्यान विद्या अथवा दार्शनिक कूतर्क के नमूने के स्वतन्त्र स्त्रोत नहीं थे, और इसलिए भी नहीं थे कि किसी प्रकार के उपद्रव के लिए केन्द्र बिंदु बन जाएँ।

"लिखा हुआ" पद के विषय में पौलुस के मन में क्या था इसके लिए अच्छा

सुराग यह सन्दर्भ उपलब्ध करवाता है। 3:19, 20 में वह दो धर्मशास्त्र पदों (अय्यूब 5:13; भजन 94:11) से उद्धरण लेकर आरम्भ करता है, "जैसा लिखा है ... ।" ये दोनों ही पद मनुष्य की कल्पनाओं पर परमेश्वर के ज्ञान को सर्वश्रेष्ठ बताते हैं। कुरिन्थ के लोग **एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व करते हुए** लिखी गई बातों से भी परे निकल गए। प्रेरित उनसे यह आग्रह कर रहा था कि वे परमेश्वर के द्वारा प्रकट किए गए ज्ञान पर निर्भर रहें। यह ज्ञान पुराने नियम के धर्मशास्त्रों में और उस प्रकाशन में पाया जा सकता है जो कि मसीह ने प्रेरित किए गए शिक्षकों के द्वारा उन्हें दिया। इन शिक्षाओं से परे जाने का अर्थ था एक खतरनाक मार्ग की ओर जाना।

आयत 7. पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को इस बात पर ही गलत नहीं बताया कि वे उसमें, अपुल्लोस में और अन्य प्रचारकों के मध्य अन्तर करते हैं परन्तु इस बात में भी उनमें गलती निकाली कि वे न्यायी की भूमिका की भी कल्पना करते हैं। 4:7 में पौलुस ने पूछा, "कौन?"; "क्या?"; "क्यों?" प्रथम प्रश्न, **तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है** कठिन है। क्या पौलुस उनके आपस में एक-दूसरे के न्याय करने के बारे में बात कर रहा है? क्या यह प्रश्न यह पूछते हुए दोष लगाता है, "तुझ में और दूसरे में कौन भेद करता है?" अनेक अनुवाद इसे इस प्रकार लेते हैं "कौन है जो तुम्हें अन्य से भिन्न बनाता है?" (NIV) अथवा "कौन तुम्हें भिन्न बताता है?" (NAB) के आधार पर रुपान्तरित करते हुए अनेक अनुवाद उसे इस प्रकार लेते हैं। इस प्रकार की व्याख्या के साथ एक मुख्य समस्या यह है कि एक व्यक्ति एक बहुवचन सर्वनाम की अपेक्षा करे जबकि सर्वनाम "तुम" (σε, *से)* यूनानी में एकवचन है।

दूसरी तरफ़ यह प्रश्न और भी सकारात्मक रुप से समझा जा सकता है: "कौन है जो तुममें अन्तर कर सकता है?" समझा गया उत्तर यह है "कोई नहीं! कोई भी जन उच्च पद पर नहीं है कि न्याय कर सके।" अगर इसका अर्थ यह था तो कोई भी जन एकवचन सर्वनाम और सम्भव है एक μή (*मी*, "नहीं" अथवा "नहीं तो") और प्रश्न का परिचय देने के लिए एक नकारात्मक उत्तर निकाले। गोर्डन डी. फ़ी का यह मानना था कि कुरिन्थ की कलीसिया के साथ पौलुस की जो रेखांकित समस्या थी वह उसके प्रेरिताई अधिकार को अस्वीकार करने के कारण थी। इसी प्रकार, फ़ी ने यह तर्क दिया कि ऊपर पूछे गए प्रश्न का अनुवाद इस प्रकार किया जाना चाहिए, "तुम क्या समझते हो कि तुम कौन हो जो स्वयं को एक पद में रखते हो जिससे कि किसी अन्य व्यक्ति के सेवक का न्याय कर सको?"[5] शेष प्रश्न इस व्याख्या को समर्थन देते हैं, परन्तु फ़ी ने एकवचन सर्वनाम के समस्यापूर्ण प्रयोग का निवारण नहीं किया। सम्भव है कि कुरिन्थ में कोई ऐसा व्यक्ति, जिसका नाम इस पत्र में नहीं लिखा गया, इन विघटनों में एक अगुवा हो। सम्भव है कि वह एकवचन सर्वनाम "तुम" को समझाए।

पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति किसी भी प्रकार की हो परन्तु अपेक्षा के अनुसार प्रतिउत्तर समान ही है: परमेश्वर के सम्मुख सब मनुष्य समान है। सब लोग परमेश्वर की उदारता से प्राप्त करते हैं। इस सभा के लोग पौलुस, अपुल्लोस, और

हो सकता है कि अन्य लोगों की शिक्षाओं से आशिषित हुए थे। किसी को भी यह अधिकार नहीं था कि वह न्यायी के पद को प्राप्त करने की कल्पना करे। अन्य लोगों के मध्य सर्वोच्च पद पाने के लिए अपने-अपने दल बना लेना और एक-दूसरे से बराबरी करने की भावना ने कृतज्ञता की अतुलनीय कमी को प्रकट किया।

प्रतिष्ठा प्राप्त करना हमारा लक्ष्य नहीं है (4:8-13)

8तुम तो तृप्त हो चुके, तुम धनी हो चुके, तुम ने हमारे बिना राज्य किया; परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते। 9मेरी समझ में परमेश्वर ने हम प्रेरितों को सब के बाद उन लोगों के समान ठहराया है, जिनकी मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो; क्योंकि हम जगत और स्वर्गदूतों और मनुष्यों के लिये एक तमाशा ठहरे हैं। 10हम मसीह के लिये मूर्ख हैं, परन्तु तुम मसीह में बुद्धिमान हो; हम निर्बल हैं, परन्तु तुम बलवान हो। तुम आदर पाते हो, परन्तु हम निरादर होते हैं। 11हम इस घड़ी तक भूखे प्यासे और नंगे हैं, और घूसे खाते हैं और मारे मारे फिरते हैं; 12और अपने ही हाथों से काम करके परिश्रम करते हैं। लोग हमें बुरा कहते हैं, हम आशीष देते हैं; वे सताते हैं, हम सहते हैं। 13वे बदनाम करते हैं, हम विनती करते हैं। हम आज तक जगत का कूड़ा और सब वस्तुओं की खुरचन के समान ठहरे हैं।

आयत 8. पौलुस के “व्यंग्य” के इन शब्दों: **तुम तो तृप्त हो चुके, तुम धनी हो चुके**, को हल्का नहीं कहा जा सकता। इसके लिए “चुभने वाली व्यंग्योक्ति” एक उत्तम पदवी है। पौलुस उस मनोभाव का वर्णन कर रहा है जो कि उसने कुरिन्थ में काम करते समय देखा। टीकाकारों ने इन शब्दों में अनेक प्रतिबिम्बित विरोधों को देखा है। भाइयों में से कुछ लोग इस बात के प्रति दृढ़ थे कि युग का अन्त आ चुका है और वे वर्तमान में पवित्र आत्मा के युग में जी रहे हैं। अगर ऐसा है तो उनके मत ने पौलुस के अधिकार के प्रति चुनौती उत्पन्न की। कुरिन्थ में इस प्रकार का विरोध कुछ ऐसी समस्याओं को समझाने में सहायक है जिनको प्रेरित ने इस पत्र में सम्बोधित किया।[6]

प्रेरित का कथन बहुत ही कठोर महसूस होता है। **तुम लोग हमारे बिना ही राजा बन गए हो**, उसने कहा। इस प्रकार के विचारों के कारण वे लोग मूर्ख थे। अगर उन्होंने पवित्र आत्मा के व्यक्तिगत प्रकाशनों के माध्यम से सच्चाई और धार्मिकता की खोज कर ली होती तो उन्हें क्रूस के सन्देश की आवश्यकता नहीं पड़ती। 4:8, 9 में पौलुस की डाँट, 1:4, 5 के प्रति एक चिन्हित अन्तर में स्थान रखती है जहाँ पर उसने कहा, “मैं तुम्हारे विषय में अपने परमेश्वर का धन्यवाद सदा करता हूँ ... कि उस में होकर तुम हर बात में, अर्थात् सारे वचन और सारे ज्ञान में धनी किए गए।” आरम्भ में उसने परमेश्वर के अनुग्रह पर उनकी निर्भरता की पहचान की थी। इस बिंदु पर, उसने अनुग्रह पर उनकी स्वयं द्वारा महसूस की गई निर्भरता पर घृणा व्यक्त की। आगे बढ़ने से पूर्व प्रेरित रुका और उसने कहा, **परन्तु भला होता कि तुम राज्य करते कि हम भी तुम्हारे साथ राज्य करते।**

पौलुस ने उन्हें आश्वासन दिया कि मसीह के साथ राज्य करने का समय आएगा। वह चाहता था कि वह दिन शीघ्र आए। जब प्रभु के साथ उनका राज्य आरम्भ होगा तब पौलुस भी उनके बीच में होगा।

पौलुस कभी-कभी व्यंग्य को आत्म-रक्षा के लिए काम में लाता था (उदाहरण के लिए देखें 2 कुरि. 11:1; 12:16), परन्तु 1 कुरिन्थियों 4:8 में यह आत्म-रक्षा किसी भी प्रकार की समस्या के रुप में देखने को नहीं मिलती। पौलुस, कलीसिया की आत्मिक भलाई के लिए चिन्तित था, जैसा कि यह विषय उसके प्रेरिताई के अधिकार से निकटता के साथ जुड़ा हुआ था। उसका आचरण उसके पाठकों के लिए एक नमूना था जिससे कि वे उसके पीछे चल सकें; उन्होंने मसीह के द्वारा परिभाषित ताकत और ज्ञान की तुलना में संसार के द्वारा परिभाषित ताकत और ज्ञान को अधिक महत्वपूर्ण बनाते हुए स्वयं का मार्ग ले लिया। अन्य जिस विषय पर भी यह पत्र रहा हो, यह संकेत करता है कि कलीसिया का एक बड़ा भाग स्वयं को, पौलुस की तुलना में उत्तम आत्मिक अगुवा मानता था। उन्होंने यह दावा किया कि पवित्र-आत्मा ने उनमें यह प्रमाणित किया था कि वे पहले से ही मसीह के साथ राज्य करने के एक पूर्ण माप का अनुभव कर चुके थे। उनकी समझ के अनुसार जीवन की नैतिक दुविधाओं के साथ संघर्ष को वे लोग पीछे छोड़ आए थे क्योंकि वे उस आत्मा के वातावरण में जी रहे थे जो कि सांसारिक विचारों को दबा देता था। पौलुस ने अपने आलोचकों के उच्च मूल्य निर्धारण को अस्वीकार किया जिसमें वे आत्मिक परख पर स्वयं के सामर्थ पर घमण्ड करते थे। वह निश्चितता के साथ उनके विचारों का खण्डन कर पाया क्योंकि पूर्ण रुप से महसूस किया गया राज्य भविष्य के लिए रखा गया है।

आयत 9. पौलुस ने उन्हें समझाया कि उनके बीच सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त करने के लिए उसने प्रेरिताई का मार्ग नहीं अपनाया। प्रेरित होना इस अर्थ में आदर की बात है कि एक व्यक्ति परमेश्वर से बुलाहट पाता है; परन्तु कठोर मानवीय सम्बन्धों में इस आदर से उसे किसी प्रकार की प्रसिद्धी अथवा आराम नहीं मिला। पौलुस "पूर्व में ही तृप्त" (4:8) नहीं हुआ था; वह अब तक धनी नहीं हुआ था कि एक राजा के समान राज्य करे। वास्तव में कुरिन्थ में भी कोई जन ऐसा नहीं था। यह समझा जाता है कि अहंकार के कारण कुछ लोगों ने पौलुस के विरोध में ऐसा कुछ कहा जिसके कारण संपूर्ण मसीही महान कार्य के प्रति गलतफ़हमी का साक्ष्य प्राप्त हुआ। जो लोग उच्च स्थान पाने की स्पर्धा में हैं उनके लिए यह आवश्यक है कि वे मसीह से और उसके चेलों से सीखें। पौलुस और उसके आलोचकों के मध्य अन्तर बहुत तीव्र था।

एक बड़े मैदान में तलवार चलाने वाले योद्धाओं के लड़ने के अलंकार का प्रयोग करते हुए पौलुस, प्रेरितों की तुलना उन लोगों के समान ठहराता है, **जिनकी मृत्यु की आज्ञा हो चुकी हो**; वे लोग **जगत के लिये एक तमाशा ठहरे हैं**। बड़े मैदान में स्थान प्रभारी कभी-कभी दोषी को भीड़ के सम्मुख घुमाया करता था। मृत्य-दण्ड पाए हुए व्यक्ति को किसी प्रकार का कोई सम्मान नहीं दिया जाता था। प्रेरित स्वयं को इन बन्दियों के समान बताता है। **वह स्वर्गदूतों और**

मनुष्यों के लिये एक तमाशा था जो कि दोपहर के मनोरंजन का एक भाग था। फिर भी उसके शब्द स्वयं पर दया दिखाते हुए शिकायत करने वाले नहीं हैं; इसके स्थान पर, पौलुस, कुरिन्थ के लोगों के सम्मुख यह प्रकट कर रहा था कि एक प्रेरित का कार्य किसी विख्यात अन्यजाति कूतर्की व्यक्ति की मोहक भूमिका के समान नहीं था। उसके आलोचकों ने चूक नहीं की। जब पौलुस ने मसीह का एक प्रेरित होते हुए उनके लिए इस प्रकार के अनादर की पीड़ा उठाई तो उनसे यह कहना उचित है कि वे उसके प्रति अपने न्याय में कुछ उदार बनें।

आयत 10. व्यंग्य किसी दुधारी तलवार के समान काम कर सकता है। शब्द अथवा व्यवहार उसके हृदय को छलनी कर चुके थे। जिन लोगों से उसे सहयोग मिलना चाहिए था उन लोगों के द्वारा वह कुचला गया और दीन किया गया। 4:10 में **हम मसीह के लिये मूर्ख हैं**, इस अर्थ में प्रभाव रखता है, “तुम जो मेरे उद्देश्य पर प्रश्न पूछते हो और मेरे हकलाने पर हँसते हो, तुम में परमेश्वर के राज्य में निस्वार्थ सेवा का कोई भाव नहीं है।” पौलुस के बोलने के स्वर से यह जानकारी मिलती है कि उसे उन लोगों के घाव के विषय में पूर्व में जानकारी मिल गई थी जिन्होंने स्वयं को **मसीह में बुद्धिमान** बताया। अपने विश्वासघाती व्यवहार को थामे रखने के लिए उसने अपने विरोधियों के सम्मुख व्यंग्य का प्रयोग किया, जिससे कि वे दर्पण में स्वयं को देखें। चँगाई मिलने से पूर्व यह आवश्यक था कि पौलुस की आलोचना करके कलंकित करने वाले लोग स्वयं के पाप की पहचान करें और उसकी गम्भीरता पर पश्चात्ताप करे। तब ही वे लोग लज्जा के समान भाव में सहभागी हो पाएँगे जिसे वह महसूस कर रहा है।

जिन लोगों ने पौलुस पर दोष लगाया था उनके विषय में ऐसा लग रहा था कि उनके द्वारा प्रभु के रुप मे मसीह को स्वीकार करना, संसार के सम्मुख स्वयं के ज्ञान और सामर्थ का एक प्रचार करना था जिससे कि उन्हें पहचान और आदर प्राप्त हो। “इसके विपरीत,” पौलुस कह रहा था, “हम प्रेरित लोग संसार को यह अनुमति देते हैं कि वह हमारी परिभाषा, मूर्ख, कमज़ोर, महत्वपूर्वहीन, उपद्रवी लोगों के रुप में करे। हम लोग ‘मसीह के लिए’ किसी भी स्तर के अनादर तक जाने की इच्छा रखते हैं। कोई भी बाहरी कारण हमें हिला नहीं सकता। हम मसीह की सेवा करते हैं जिससे कि, चाहे पुरुष हो या स्त्री, सब लोग सच जान सकें और बच जाएँ। हम संसार के द्वारा कही जाने वाली विरोध की बातों को भी गले लगाते है। **हम निर्बल हैं ... हमारा निरादर होता हैं**।”

आयत 11. यहाँ दिया गया व्यंग्य एक प्रेरित के कार्य के अर्थ पर सौम्य प्रतिबिम्बन के लिए मार्ग देता है। प्रायः यह अर्थ निकाला जाता है कि **भूखे और प्यासे** और नंगे होने का अर्थ है, पर्याप्त कपड़े अथवा छत का न होना। ये शब्द स्वयं का विश्लेषण करते हैं। प्रेरिताई पर पौलुस का मनन ऐसा प्रतीत होता है कि यह मात्र उसके स्वयं के लिए है और साथ ही उसके पाठकों के लिए है। धर्म के बचाव का विचार 2 कुरिन्थियों 11:23-29 में बहुत प्रख्यात था, और सम्भव है कि 2 कुरिन्थियों 6:3-10 में यह कम स्पष्टता के साथ हो। यरुशलेम के आराम और अपने साथी फ़रीसियों के साथ विद्वतापूर्ण विचार-विमर्श उसके भूतकाल में

पीछे छूट गए थे। कुछ ही समय पूर्व वह अनातोलिया के उच्च मैदानी भागों पर गर्म दिन और ठंडी रातों को याद करता है। सम्भव है कि वहाँ वह अकेला रहा हो, सम्भव है कि एक साथी के साथ अथवा एक से अधिक साथी के साथ उसने उस भूमि में लम्बी यात्राएँ की हों, जिसमें वह आगे बढ़ते हुए एक दिन में बीस मील चला हो जिससे कि इफ़िसुस पहुँच जाए (प्रेरितों 19:1)। भोजन की कमी को उसने देखा और उसके पास धन भी पर्याप्त मात्रा में उस समय न रहा। उसने ख़ुले में विश्राम किया और लुटेरों के विषय में जागृत रहा। इफ़िसुस में किसी भी दल ने उनका गर्मजोशी के साथ स्वागत नहीं किया। कहीं कोई व्यक्ति अगर द्वार ख़ोल देता तो वही स्थान उसके ठहरने का स्थान बनता था। अनेक कपड़े होना और स्नान करना भोग-विलास माने जाते थे। **इस घड़ी तक** उसने प्रेरिताई का बोझ उठाया। यह उसके आदर का चिन्ह था। अन्तिम वाक्यांश **मारे-मारे फिरना** (ἀστατέω, *अस्टेटीओ),* नए नियम में मात्र इसी स्थान में देखने को मिलता है; इसका अर्थ है इधर-से-उधर फिरना, अव्यवस्थित।

आयत 12. सम्भव है कि कुरिन्थ में कुछ लोगों को अक्विला की कार्यशाला में पौलुस के साथ अपनी प्रथम भेंट के विषय में याद हो (प्रेरितों के काम 18:2, 3)। उसने किसी प्रकार के दान की आशा नहीं की। **अपने ही हाथों से काम करके**, उसने और अन्य शिक्षकों ने स्वयं के खर्चों को पूरा किया। प्रेरित के कार्य करने का व्यवहार यूनानी-रोमी संसार में विद्वान दार्शनिकों और धनवान ज़मीनदारों के द्वारा बाज़ार में विरोध का कारण बन गया। पौलुस के बुद्धिजीवी साथियों ने हाथ से काम करने के लिए उसका ख़ुला मज़ाक उड़ाया।[7] स्वयं की भूमिका में प्रेरित ने "रात दिन काम धन्धा करते हुए," कार्य किया, "कि तुम में से किसी पर भार न हो।" (1 थिस्स. 2:9)। पौलुस के शत्रुओं ने उसे चुप करने के प्रयास के द्वारा, पाप में खोए हुए एक संसार को मसीह तक लाने के प्रयासों का प्रतिउत्तर दिया। हालांकि प्रेरित को **बुरा-भला** कहा गया और **सताया** गया फिर भी उसने उदारता से व्यवहार किया और अपने मिशन में दृढ़ बने रहते हुए अपने विरोधियों को आशिष दी।

आयत 13. प्रेरित होने का अर्थ किसी प्रकार का आराम का जीवन नहीं है। जो मिशन, मसीह के द्वारा पौलुस को दिया गया वह प्रेरित के लिए कोई सामाजिक ताकत अथवा आदर नहीं लाया; इसके विपरीत, इसका अर्थ था, अपने विरोधियों के सामने अपना दूसरा गाल भी फेर देना, निन्दा होने पर दूसरे लोगों को उत्साहित करना और **जगत का कूड़ा और सब वस्तुओं की खुरचन के समान** व्यवहार पाना। अनेक प्राचीन लेखकों ने प्रशंसा, प्रसिद्धी और ताकत को पाना चाहा। संसार का नामी व्यक्ति होने की अपेक्षा पौलुस कुरिन्थ में अपने पीछे चलने वाले लोगों के पालन-पोषण की इच्छा रखता था। वहाँ के लोगों उसे ऐसे व्यक्ति के रुप में देखना चाहते थे जो कि अपुल्लोस के दल के स्थान पर अपने दल के लिए लड़ने के लिए तैयार हो और विजयी रहे। पौलुस इस प्रकार के विषयों में रुचि नहीं रखता था। उसे श्राप देने वाले लोगों को उनकी इच्छा के अनुसार निरन्तर श्राप देने के लिए पौलुस ने छोड़ दिया। पौलुस ने पूरी तरह से उन चीज़ों

को अस्वीकार किया जिन चीज़ों को, उसके समकालीन लोग महिमामय और आदरणीय मानते थे। उसने स्वयं के लिए मनुष्य की प्रशंसा के स्थान पर प्रभु की स्तुति की खोज की। पौलुस ने आनन्द के साथ अपुल्लोस अथवा किसी भी अन्य जन का आदर किया जिसने मसीह की प्रशंसा की। उपयुक्त रुप से, अपुल्लोस के दल से प्राप्त चुनौती के प्रति प्रेरित के उदार प्रतिउत्तर ने सम्भावित रुप से उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया होगा और लज्जित कर दिया होगा।

विश्वास में "पिता" के रुप में पौलुस (4:14-21)

कुरिन्थ में सब मसीही लोग पौलुस और उसके प्रेरिताई मिशन की निन्दा करके उसे कलंकित करने वाले नहीं थे। प्रेरित का कार्य इस प्रकार का था कि वह कभी विश्वासयोग्य लोगों को उत्साहित करता तो कभी उन लोगों को डाँटता था जो कि देह की एकता के साथ समझौता करने के लिए तैयार हो जाते थे। पौलुस ने अपनी पत्री के इस भाग को व्यक्तिगत शब्दों से इस प्रकार संक्षिप्त किया जिससे कि पाठकों को स्मरण दिलाया जा सके कि किसके लिए उन्होंने कष्ट सहा, किस प्रकार निरन्तर उसने उनकी देख-भाल की और कलीसिया की रुकी हुई गति में एक संतोषजनक निष्कर्ष लाने के लिए वह किस प्रकार दृढ़ निश्चय रखता है।

14मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये ये बातें नहीं लिखता, परन्तु अपने प्रिय बालक जानकर तुम्हें चिताता हूँ। 15क्योंकि यदि मसीह में तुम्हारे सिखानेवाले दस हज़ार भी होते, तौभी तुम्हारे पिता बहुत से नहीं; इसलिये कि मसीह यीशु में सुसमाचार के द्वारा मैं तुम्हारा पिता हुआ। 16इसलिये मैं तुम से विनती करता हूँ कि मेरी सी चाल चलो। 17इसलिये मैं ने तीमुथियुस को जो प्रभु में मेरा प्रिय और विश्वासयोग्य पुत्र है, तुम्हारे पास भेजा है। वह तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूँ। 18कुछ तो ऐसे फूल गए हैं, मानो मैं तुम्हारे पास आने ही का नहीं। 19परन्तु प्रभु ने चाहा तो मैं तुम्हारे पास शीघ्र ही आऊँगा, और उन फूले हुओं की बातों को नहीं, परन्तु उनकी सामर्थ्य को जान लूँगा। 20क्योंकि परमेश्वर का राज्य बातों में नहीं परन्तु सामर्थ्य में है। 21तुम क्या चाहते हो? क्या मैं छड़ी लेकर तुम्हारे पास आऊँ, या प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ?

आयत 14. कुरिन्थ की कलीसिया के लिए कुछ बातें जो पौलुस ने लिखी वे वास्तव में उनके लज्जाजनक व्यवहार की ओर संकेत कर रही थी। मसीह के चेलों के लिए यह लज्जाजनक था कि जब वे स्वयं के लिए सोचते हैं कि वे तृप्त हो चुके हैं, धनी हो चुके हैं और राज्य करने वाले लोग बन गए हैं (4:8) तब वे पौलुस के प्रति अनादर रखते हैं जो कि मसीह का प्रेरित है। वे पौलुस को मूर्ख समझते थे और स्वयं को "ज्ञानी" अथवा बुद्धिमान (4:10) समझते थे। व्यंग्य, व्यंग्योक्ति और लज्जा वे साधन थे जिनका प्रयोग करने में प्रेरित झिझका नहीं। बाद में इसी पत्र में उसने दोहराया, "मैं तुम्हें लज्जित करने के लिये यह कहता हूँ" (6:5; देखें

15:34)।

पौलुस के कहने का अर्थ क्या था? उसका उद्देश्य उन्हें **लज्जित** करना नहीं था परन्तु उन्हें **चिताना** था। उसने उनसे कहा कि उसने सीधे रुप से कहा है कि माता-पिता अपने बच्चों के साथ स्थिर व्यवहार रखें। उसने मूल रुप से कहा, "तुम्हें स्मरण कराने में मैं आनन्द नहीं पाता कि तुममें कुछ लोगों का व्यवहार बहुत ही लज्जाजनक है परन्तु लज्जाजनक व्यवहार की पहचान करना, पश्चात्ताप के लिए पहला चरण है। तुम्हें चिताने के पीछे मेरा लक्ष्य यह है कि परमेश्वर का अनादर करने और उसकी कलीसिया की निन्दा करने वाले स्वभाव और सोचने के तरीकों से तुम्हें लौटा लाऊँ। जैसा कि मैं तुमसे प्रेम करता हूँ मेरा उद्देश्य मात्र तुम्हें लज्जित करना नहीं है।"

आयत 15. कुरिन्थ के लोगों के पास ऐसा कोई शिक्षक नहीं था जो कि पौलुस के समान हो। अन्य लोगों ने उन्हें परिपक्व बनने और बढ़ने में सहायता दी होगी परन्तु पौलुस का उनके साथ जो सम्बन्ध था वैसा किसी और के साथ नहीं था। ऐसे कुछ लोग जिनका कलीसिया पर प्रभाव था, उनके हृदय में मसीहियों के लिए बोझ नहीं था। यहाँ तक कि जिन लोगों ने सच्चाई सिखाई वे भी पौलुस की तुलना में मात्र संरक्षक, रक्षक अथवा पथप्रदर्शक ही रहे। हो सकता है कि इन भाइयों के पास **मसीह में सिखाने वाले अनगिनत लोग** हों परन्तु उनके **बहुत से पिता नहीं थे**। विश्वास में पौलुस उनका पिता था। यहाँ पर "सिखानेवाले" के लिए जो शब्द (*παιδαγωγός* से, *पैडागोगोस)* है यह उसी शब्द के समान है जिसका प्रयोग प्रेरित ने गलातियों 3:24, 25 में किया जहाँ पर उसने कहा कि लोगों को मसीह तक पहुँचाने के लिये व्यवस्था एक "शिक्षक" अथवा संरक्षक थी। गलातियों में दो बार इस शब्द के दिखाई देने को छोड़ यह शब्द नए नियम में कहीं और देखने को नहीं मिलता है।

वे सब लोग जिन्होंने कुरिन्थ के लोगों को सिखाया वे एक आदरणीय स्थान रखते हैं परन्तु पौलुस का उनके साथ एक अद्वितीय सम्बन्ध था। यह पौलुस था जो कि उनको आत्मिक जन्म के बिंदु तक लाया। उनका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसका यह दावा था कि उसने सर्वप्रथम उनके बीच मसीह का परिचय दिया। उनके लिए उसकी चिन्ता उसी समान थी जिस प्रकार एक पिता अपने बालक की चिन्ता करता है। इतना होने के बाद भी उसकी भूमिका कठोर अधिकार के साथ नहीं थी। उसने यह नहीं कहा, "तुम्हें मेरी आज्ञा का पालन करना चाहिए। जो मैं कहता है उसकी मुझे जाँच करने की आवश्यकता नहीं है; मैं मुख्य अधिकारी हूँ।" इसके विपरीत पौलुस ने उनका आदर किया। जैसा कि वह उनका आत्मिक पिता था उन्हें कम-से-कम यह चाहिए था कि वे उस भण्डारीपन को ध्यान में रखें जिस पर उसे प्रभु ने ज़िम्मेदारी दी है।

पिता के रुप में पौलुस का निवेदन यह स्मरण करवाता है कि मसीही लोग और उनके आत्मिक अगुवों के बीच सम्बन्ध को कभी भी मात्र आज्ञाकारिता से ही नहीं मापा जाता। थिस्सलुनीकियों के लोगों को प्रेरित ने लिखा, "हे भाइयो, हम तुम से विनती करते हैं कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, ... उनका सम्मान करो।

और उनके काम के कारण प्रेम के साथ उनको बहुत ही आदर के योग्य समझो" (1 थिस्स. 5:12, 13)। ये शब्द प्राचीनों के लिए, सुसमाचार प्रचारकों के लिए और अन्य उन लोगों के लिए लागू होते हैं जिन्होंने परमेश्वर के राज्य के निर्माण के लिए स्वयं के बल को समर्पित किया है। कलीसिया में पाए जाने वाले प्राचीन किसी बोर्ड के निर्देशक नहीं हैं; वे चरवाहे हैं जो भेड़ों की देख-भाल करते हैं और प्रेम के कारण परिश्रम करते हैं।

आयत 16. जब पौलुस ने कुरिन्थ के लोगों को लिखा, तब नया नियम तैयार किए जाने की प्रक्रिया में था; अतः उस समय के धर्मी शिक्षकों का उदाहरण आज के समय के धर्मी शिक्षकों की तुलना में बहुत ही महत्वपूर्ण है। प्रेरित स्वयं को आगे रखते हुए बताता है कि मात्र उसने उन्हें सिखाया ही नहीं परन्तु सुसमाचार के अनुसार जीवन जीने का नमूना भी प्रस्तुत किया (देखें 11:1; फ़िलि. 3:17)। वह चाहता था कि ये "प्रिय" भाई (4:14) उसके उस आचरण को ध्यान में रखे जिसके साथ उसने उनके बीच में काम किया। जैसा कि वह सदैव स्वयं के बच्चों के समान उनसे प्रेम करता था और उनके लिए मसीह का उदाहरण रहा (**अतः**) उसने उन्हें उपदेश दिया, **मेरी सी चाल चलो**। डोनाल्ड ए. कारसन ने पौलुस की चुनौती को इस प्रकार संक्षिप्त किया: "मसीही विश्वास में अन्य लोगों को चेला बनाने के काम में हृदय से निकटता रखना, सीखने वाले के सम्मुख नमूने के रुप में सेवा करते हुए स्वयं अनुशासित होना है।"[8] अपनी पत्रियों में प्रेरित ने दृढ़ता के साथ यह प्रस्तुत किया कि वह ईमानदार रहा है (1 थिस्स. 2:1-12)। अपने कहने के द्वारा और जो कुछ वह था उसके द्वारा उसने लोगों को सिखाया। जो लोग सुसमाचार का सन्देश सुनते हैं उनके पास पूरा अधिकार है कि वे अपने शिक्षकों से यह अपेक्षा रखें कि वे उनके जीवन में नमूना बनने के लिए सुसमाचार का पालन करें। कलीसिया उस समय, स्थिर रहने वाली हानि का सामना करती है जब इसके अगुवे कहते हैं, "वैसा ही करो जैसा कि मैं कहता हूँ, न कि जो मैं करता हूँ।" कोई भी प्राचीन अथवा प्रचारक जो कि एक उपयुक्त स्तर के अन्तर्गत यह नहीं कह सकता, "मेरी सी चाल चलो," उसे अगुवाई करने की भूमिका से बाहर निकल जाना चाहिए। पौलुस ने इस सच की पहचान की और अपनी ज़िम्मेदारी को स्वीकार किया।

आयत 17. पौलुस की अनुपस्थिति में उसके शिक्षा की स्मरणार्थ, प्रेरित तीमुथियुस को कुरिंथुस भेज रहा था। चूँकि तीमुथियुस पौलुस के साथ इस पत्री के अभिवादन में शामिल नहीं है, तो इससे यह समझा जा सकता है कि वह उस समय प्रेरित के साथ नहीं था। पौलुस ने उसे इरास्तुस के साथ मकिदुनिया भेजा था (प्रेरितों. 19:22); परंतु यात्रा की अनिश्चितता के कारण, प्रेरित को उसके लौटने के बारे में उचित आंकलन नहीं था, या फिर क्या वह उसको वहाँ दोबारा मिल पाएगा या नहीं, इसके बारे में भी वह आश्वस्त नहीं था। पौलुस ने लिखा, **तीमुथियुस को मैंने तुम्हारे पास भेजा है**; परंतु उसे पूरी तरह इस बात की निश्चितता नहीं थी कि वह वहाँ पहुँचा है कि नहीं। पहला कुरिंथियों 16:10 में तीमुथियुस के एक और उल्लेख से यह बात स्पष्ट है। पौलुस को यह आशा नहीं थी

कि कुरिंथुस वासियों को उसकी पत्री के मिलने के कुछ समय पश्चात् ही तीमुथियुस वहाँ पहुँचेगा। उसे यह आभास हुआ कि कुछ स्थानीय आपातकालीन स्थिति के कारण तीमुथियुस को कुरिंथुस की मिशन यात्रा को स्थगित करना पड़ा। जब-जब तीमुथियुस पहुँचेगा, पौलुस केवल इस बात की अपेक्षा कर सकता था कि उसने अपने कनिष्ठ सहयोगी को आवश्यकतानुसार प्रभावकारी प्रशिक्षण दे दिया है। तीमुथियुस भली भांति जानता था कि पौलुस ने सभी कलीसियाओं को क्या शिक्षा दी थी। वह इन मसीहियों को आत्मा के प्रेरणानुसार प्रेरितों का निर्देश, जिनकी उनको आवश्यकता है, पहुँचा देगा। पौलुस ने कहा, तीमुथियुस **तुम्हें मसीह में मेरा चरित्र स्मरण कराएगा, जैसे कि मैं हर जगह हर एक कलीसिया में उपदेश करता हूँ।**

दूसरा कुरिंथियों के लिखे जाने के समय तक तीमुथियुस, पौलुस से आकर मिल चुका था, और उसने उस पत्री के संबोधन में अपना नाम लिख दिया था। तीमुथियुस का सर्वसम्मति से कुरिंथुस वासियों की सहायता करने के लिए चुनाव किया गया होगा क्योंकि वह इस नगर में पौलुस और सीलास के संग कार्य कर चुका था (प्रेरितों. 18:5; 2 कुरिं. 1:19)। पौलुस की पत्रियों से पाठक इस बात का आंकलन नहीं कर सकते कि क्या तीमुथियुस कुरिंथुस वापस आया था या नहीं; यदि वह आया था तो वहाँ उसका प्रयास पूर्णतया सफल नहीं हुआ था। उसके वारे में पौलुस की पत्रियों के वक्तव्य यह सुझाव प्रस्तुत करते हैं कि वह अपने आपको उनके सम्मुख पूरी तरह प्रस्तुत करने से डरता था (देखें 1 तीमु. 4:12-14; 2 तीमु. 1:6, 7)। उसका स्वभाव कलीसिया में आए भूचाल को थामने के अनुकूल नहीं था। दूसरा कुरिंथियों में हमें यह देखने को मिलता है कि तीमुथियुस नहीं बल्कि तीतुस ने इस नगर की कलीसिया का समाचार पौलुस को दिया था (2 कुरिं. 1:1, 2; 7:6, 7)। ऐसा प्रतीत होता है कि कलीसिया की स्थिति में तीतुस ही सुधार ला पाया था; तीमुथियुस की सफलता के बारे में अनिश्चितता बनी हुई है।

आयत 18. कुछ कुरिंथुस वासी फूल गए थे और उन्होंने इस बात से **इंकार** किया कि वे पौलुस को देह में फिर देख सकेंगे। संभवतः उन्होंने यह अनुमान लगाया होगा कि पौलुस भी भ्रमणकारी दार्शनिकों के समान है - कि जो कुछ वह उनसे प्राप्त कर सकता था उसने प्राप्त कर लिया और दोबारा वापस नहीं आएगा। फिर भी, पौलुस ने अपने विषय में स्पष्ट बात कही। उसका कल्याण और जीवन उन लोगों के चारों ओर घूमता था जो उसके विश्वास के सहभागी हुए थे। बहु-प्रचलित दर्शनशास्त्रियों के विपरीत, पौलुस ने अपने कार्यों को तब तक महत्व नहीं दिया जब तक कि उसने शिष्यों का समुदाय, जो मसीह को समर्पित था, उस नगर में नहीं छोड़ा। सुसमाचार सुनाने के पश्चात्, वह उन्हें यह शिक्षा देने के लिए ठान लेता था कि वे एक ऐसे लोगों का झुंड बने जो प्रभु के निर्देशों का पालन करते हों।

आयत 19. जिन्होंने अपने बौद्धिक ज्ञान का खुल्लमखुल्ला प्रदर्शन किया था वे पौलुस के अनुपस्थिति से धोखे में थे। **परंतु मैं तुम्हारे पास शीघ्र ही आऊँगा,**

प्रेरित ने उन्हें आश्वासन दिया। बस केवल इतना था कि यह यात्रा प्रभु की इच्छा में हो (देखें प्रेरितों. 18:21; याकूब 4:15)। ऐसा लगता है कि उसने इस नगर का संक्षिप्त भ्रमण किया था जिसका विवरण प्रेरितों की पुस्तक में नहीं किया गया है। उसने "खलोए के घराने" के जहाज़ में दो दिन की यात्रा की होगी (1:11), कुरिंथुस पहुँचने तक उसने एक द्वीप से दूसरे द्वीप में होते हुए समुद्री यात्रा की होगी। स्पष्ट रूप से यह वैसी यात्रा नहीं रही होगी जैसा पौलुस ने चाहा था। ऐसा लगता है कि विरोधियों ने निर्दयतापूर्वक उस पर आक्रमण किया होगा जब कि उसके साथी चुपचाप खड़े होकर देखते रहे (देखें 2 कुरिं. 12:21)।

यह जानना कठिन होगा कि पौलुस का इससे क्या तात्पर्य था जब उसने कहा कि वह **उन फूले हुओं की बातों को नहीं, परन्तु उन की सामर्थ को जान लेगा।** पौलुस ने इस "सामर्थ" के प्रदर्शन की अपेक्षा किस प्रकार की थी, वह अस्पष्ट है। क्या उसके मस्तिष्क में कोई आश्चर्यकर्म था (देखें 13:2)? उसे इस बात का विश्वास नहीं था कि उसके विरोधी भी वैसा ही सामर्थ दिखाएंगे जो उसे पवित्र आत्मा के सामर्थ से प्राप्त होता है। क्या उसने अपने विरोधियों को दृष्टिहीन करने की योजना बनाई थी जैसा कि उसने कुप्रुस में इलीमास के साथ किया था (प्रेरितों. 13:11), या फिर क्या वह मसीह के वचन की सामर्थ की चर्चा कर रहा था? क्या वह उन्हें झूठा बताकर शर्मिंदा करना चाहता था? संभवतः वह यह कहना चाहता था कि उनके व्यवहार और शब्दों में तालमेल न होना उनका सामर्थहीन होना प्रदर्शित करता था।

आयत 20. जो भी पौलुस इस सामर्थ के बारे में चर्चा कर रहा हो**,** इसका संबंध **परमेश्वर के राज्य** से है। यीशु की शिक्षा से राज्य अलग नहीं थाः यह दृष्टांतों का विषय था (मरकुस 4:26, 30) और पश्चाताप के लिए प्रेरणास्रोत था (मत्ती 3:2; मरकुस 4:17)। प्रेरितों के काम की पुस्तक और पत्रियों से यह स्पष्ट है कि जिस परमेश्वर के राज्य के बारे में भविष्यवाणी की गई है, वह आ गया है (कुलु. 1:13)। यह कलीसिया है जिसको बनाने के लिए यीशु ने प्रतिज्ञा की है (मत्ती 16:18)। "परमेश्वर का राज्य" शब्दांश पत्रियों के बजाय सुसमाचारों में अधिक स्थाई है परंतु हमारे समझने के लिए यही पर्याप्त है कि पत्रियों में "कलीसिया" के साथ इसका अन्तर्निमेय प्रयोग किया गया है। परमेश्वर के राज्य के बारे में शिक्षा, शब्दों का प्रयोग या वाद विवाद से बढ़कर है।

इस अनुच्छेद में **सामर्थ** का विषय जारी रहता है। मसीह के पास जीवन परिवर्तन करने का सामर्थ है, लेकिन क्या पौलुस का यही तात्पर्य है? संभवतः वह "परमेश्वर के राज्य" को यीशु मसीह की सामर्थ या पवित्र आत्मा की सामर्थ को प्रस्तुत करने के लिए अलंकार के रूप में प्रयोग कर रहा था। जो भी सामर्थ हो, पौलुस ने इसका अभ्यास करने की योजना बनाई थी।

आयत 21. लियोन मौरिस के अनुसार, "प्रश्न यह नहीं है कि क्या पौलुस आएगा, लेकिन यह कि वह कैसे आएगा।"[9] जिस आत्मा के साथ पौलुस कुरिंथुस लौटने का विचार बना रहा था वह कलीसिया का मसीह की शिक्षा की ओर परिवर्तन पर निर्भर था। प्रेरित ने उनके मध्य **प्रेम और नम्रता की आत्मा के साथ**

जाने को प्राथमिकता दी; लेकिन उसको **एक छड़ी के साथ**, कठोर घुड़की के साथ भी आना पड़े तो वह उसके लिए भी तैयार था। ऐसा जान पड़ता है कि पौलुस संभवतः यह कह रहा हो कि उसके तर्क की ताकत इतनी होगी कि उसके विरोधी शब्दहीन रह जाएंगे।

अनुप्रयोग

भण्डारीपन

प्रेरिताई एक प्रकार का भण्डारीपन है, जिसका स्तर स्वयं मसीह द्वारा प्रदान व्यक्तिगत् आज्ञा है। प्रेरित की सेवा यीशु की मृत्यु के दशक बाद ही सक्रिय हो गई थी, लेकिन भण्डारीपन हर एक मसीही का पापांगीकार और मसीह के आज्ञाकारी होने में निहित है। भण्डारीपन कोई सेवा नहीं थी, लेकिन यह एक व्यवहार था जिसे पौलुस के दिनों के लोग इसे अच्छी तरह जानते थे। यूनानी शब्द *ओईकोनोमोस* (οἰκονόμος) जिसका अनुवाद "भण्डारीपन" किया गया है नए नियम में दस बार अवतरित हुआ है। इसका सामान्य अर्थ लूका 12:42 में स्पष्ट किया गया है, जहाँ यीशु ने कहा, "वह विश्वासयोग्य और बुद्धिमान भण्डारी कौन है, जिसका स्वामी उसे नौकर चाकरों पर सरदार ठहराए कि उन्हें समय पर भोजन सामग्री दे?" एक अविश्वासी भण्डारी के बारे में यीशु का दृष्टांत लूका 16:1-12 में अंकित किया गया है। NASB के अनुसार गलातियों 4:2 में इसी शब्द का अनुवाद "प्रबंधक" किया गया है।

कभी-कभी बड़ी-बड़ी सम्पत्ति के स्वामी, भण्डारियों को अपनी सम्पत्ति का प्रभारी नियुक्त करते थे। जबकि भण्डारी उसमें से कुछ भी नहीं अपना सकते थे। उनका केवल इतना कर्तव्य होता था कि जो कुछ उनके सुपुर्द किया गया है वे उसकी देखभाल करें। पौलुस की प्रेरिताई भण्डारीपन विशेष प्रकार का था, परंतु नया नियम में "भण्डारीपन" का प्रयोग मसीहियों की सामान्य ज़िम्मेदारी के लिए किया गया है। उदाहरण के लिए, प्राचीनों को मसीह की कलीसिया की आत्मिक गतिविधि की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है (तीतुस 1:7)। उनकी ज़िम्मेदारी यह है कि वे विश्वासियों को शिक्षा और उलाहना दे, और स्वर्ग के मार्ग में आगे बढ़ने के लिए उनका मार्गदर्शन करें। मसीह, जिसने अपने लहू से कलीसिया को खरीदा है, केवल वही इसके चरित्र को परिभाषित कर सकता है, इसकी आराधना का निर्धारण कर सकता है, और इसके मिशन को घोषित कर सकता है। जब तक वह लौट के नहीं आ जाता है, तब तक प्राचीनों को उसकी कलीसिया का उसकी दिशा निर्देशानुसार मार्गदर्शन करने की ज़िम्मेदारी सौंपी गई है; अर्थात वे उसके भण्डारी हैं।

केवल प्राचीनों को ही भण्डारी की भूमिका नहीं दी गई है। सभी मसीहियों का कार्य प्रेरितों या प्राचीनों के जैसा नहीं है, लेकिन जिनको जो भी वरदान या क्षमता परमेश्वर से प्राप्त है, वह उनका प्रयोग करने के लिए ज़िम्मेदार भी ठहराया गया है (1 पतरस 4:10)। भण्डारीपन को गले लगाए बिना कोई भी

मसीह में आशा नहीं रख सकता है। पतरस ने एक दूसरे के लिए प्रेम, अतिथि सत्कार, परमेश्वर के वचन का उच्चारण, और सेवा जैसे गुणों का बखान किया है। साधारण कार्य की अर्हता यह हैः पड़ोसी को रविवार की आराधना के लिए निमंत्रण देना, एक बीमार मित्र की सहायता करना, किसी ज़रूरतमंद के लिए भोजन तैयार करना, और संघर्ष कर रहे मसीही की सुधि लेना, सभी सेवा के अंग हैं। परमेश्वर अपने लोगों को विभिन्न प्रकार के गुणों से सुशोभित करता है। पौलुस ने लिखा, "भण्डारी में यह बात देखी जाती है कि वह विश्वासयोग्य हो" (1 कुरिं. 4:2)।

प्रचारक और प्रचार

जो सेवा करते हैं, शिक्षा देते हैं, और सदस्यों का दिशा निर्देशन करते हैं, उनके साथ मसीह की कलीसिया का अनिश्चित या यहाँ तक कि कष्टदायक संबंध भी होता है। चुने हुए लोगों का यह उत्तरदायित्व है कि वे सेवा करें, शिक्षा दें, और यीशु और प्रेरितों के शिक्षानुसार जीवन का निर्धारण करे; परंतु वे भी इसी मिट्टी की देह में रहकर सेवा करते हैं, जो अपनी ही कमज़ोरियों से पीड़ित हैं। जो मसीहियों की सेवा करते हैं उनके प्रति उनकी धारणा या तो बहुत ऊँची होगी या फिर बहुत नीची। उनको हर प्रकार का अधिकार है कि वे प्रचारक से उन बातों को पालन करने की अपेक्षा करें जो वह सिखाता है; परंतु जब वे समझ और क्षमादान का अनुग्रह समझने में असफल रहते हैं तो वे उस परिपक्वता के उस स्तर की मांग करते हैं जो कोई भी मनुष्य प्राप्त नहीं कर सकता है।

मसीहियों को प्रचारकों का एक दूसरे से तुलना नहीं करना चाहिए कि प्रभु की सेवा करना मैराथन दौड़ के समान नहीं है या फिर किसी दफ्तर में पदोन्नति प्राप्त करने के लिए एक दूसरे के साथ होड़ लगाना जैसा भी नहीं है। पौलुस और अप्पुलोस ने कुरिंथुस में कुछ इसी प्रकार की समस्या का सामना किया था। प्रेरित ने कलीसिया में व्याप्त इस प्रकार की प्रतिस्पर्धा को संबोधित किया, जैसे कलीसिया ने उसके और अप्पुलोस के मध्य किया था। उसने उनसे आग्रह किया कि वे "एक के पक्ष में और दूसरे के विरोध में गर्व न करे" (4:6)। हर एक अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार सेवा करता है। हो सकता है कि वे एक दूसरे से अधिक ज्ञानवान हों; वे एक दूसरे से अधिक वाकपटुक हों। प्रत्येक सदस्य को वही कार्य करना है जो उसके पास है।

स्पष्ट रूप से, कुछ विश्वासियों ने पौलुस की वाकपटुता या बौद्धिक क्षमता को अप्पुलोस से कम या ज़्यादा आंका होगा। अपने पसंदीदा प्रचारक का चुनाव करके उन्होंने अपने आपको अलग-अलग खेमों में बांट लिया था। कुछ आधुनिक कलीसियाओं के समान उनका हर एक संदेश प्रतिस्पर्धा का विषय बन गया था। कौन सबसे अधिक मनोरंजक था? किसकी कहानी सबसे अच्छी थी? प्रचारक अपने आपको एक कठिन परिस्थिति में पाता है। यदि वह अपने संदेश के शब्दरूप पर थोड़ा ध्यान देता है तो वह बड़ा ही उबाऊ और अप्रेरणादायक समझा जाता है। यदि वह मनोरजंन पर अधिक ज़ोर देता है, तो वह मसीह की शिक्षा और

उसके महत्व को कम आंकता है।

उन्नसवीं सदी के अंत में थॉमस हार्डी ने *द मेयर आफ कास्टरब्रिज* लिखी। इस उपन्यास में उन्होंने एक दृष्य का वर्णन किया है जिसमें दो नगरों के नागरिक रविवार अपराह्न को हास-परिहास में जुटे हुए थे। हार्डी ने लिखा,

> वार्तालाप हफ्ते भर की दिनचर्या का वार्तालाप नहीं था, लेकिन इसमें सबसे अच्छी बात यह थी की उनका परिहास चरम पर था। वे संदेश पर चर्चा कर रहे थे, इसका विच्छेदन कर रहे थे, उसका नाप-तौल कर रहे थे, कि वह औसत से अधिक या कम था - सामान्य प्रवृत्ति को वे एक वैज्ञानिक या प्रदर्शन के रूप में मानते थे जिसका उनके जीवन से कोई संबंध नहीं था, इसके बजाय कि आलोचकों और चीजों की आलोचना की गई थी।[10]

आज के प्रचारकों ने शायद ही उस प्रकार की बातों का अनुभव किया होगा जिस प्रकार के बातों का हार्डी ने खुलासा किया है। हाल ही में, अपने प्रचार की सेवाकाई को लेकर, जेम्स मोण्टगोमरी बॉइस ने अपनी कुंठा का इस प्रकार वर्णन किया हैः

> लोग मनोरंजन के लिए कलीसियाओं की ओर ताकते हैं, और जो कलीसिया सबसे मनोरंजकारी है वही सबसे सफल है। लोग कलीसिया में परमेश्वर से मिलने या उसकी उपस्थिति का अनुभव करने नहीं आते हैं, या फिर यह समझने के लिए नहीं आते हैं कि आराधना क्या है या फिर कैसे आराधना करना है, सीखना चाहते हैं; वे अच्छा अनुभव करने के लिए आते हैं, दूसरे शब्दों में वे अपना मनोरंजन करने के लिए आते हैं। …
>
> प्रचारक बहुत देर तक वार्ता नहीं कर सकते हैं और न ही वे अति गंभीर हो सकते हैं, वे धर्मविज्ञान से संबंधित शब्दों का प्रयोग भी नहीं कर सकते हैं। संदेश अनुभव किए जाने वाले शब्दों से ही मापा जा सकता है। हमें मज़ाकिया होना होता है और व्यक्तिगत् कहानी बतानी पड़ती है।
>
> कलीसिया को यह पता लगाना होता है कि परमेश्वर कौन है, उसको जानने के लिए कलीसिया में आना होता है, और उसके साथ संगति करनी होती है। उसके लिए बाइबल की व्याख्या और उससे शिक्षा देना ही एक मात्र स्थान है।[11]

प्रचार करना कलीसिया में अन्तर्निहित है (2 तीमु. 4:1, 2)। संदेश, एक भाषण से बढ़कर है; यह स्तुति और आराधना भी है। संदेश के द्वारा, कलीसिया का सेवक कलीसिया को शिक्षा देने और भक्तिपूर्ण जीवन जीने के लिए उत्प्रेरित करता है। कलीसिया को प्रचारकों से सर्वोत्तम की अपेक्षा करनी चाहिए, परंतु भाईयों को यह भी सीखना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति जो इस कार्य के लिए ला सकता है, उसे स्वीकार करना चाहिए। जब मसीही लोग एक प्रचारक को दूसरे प्रचारक के विरुद्ध खड़ा करते हैं और अपने पसंद के अनुसार दल बनाते हैं तो इससे किसी को भी कोई लाभ नहीं होगा।

विनम्रता के लिए बुलाहट

विनम्रता एक शांत, अपरिहार्य गुण है। यह अहंकार के विरूद्ध रहता है और अपनी बड़ाई नहीं करता है। संभवतः पौलुस के विरोधियों ने अपने आपको "अहंकारी" के रूप में नहीं पहचाना होगा। अधिकांश लोग दूसरों की विनम्रता या अहंकार की पहचान करते हैं; लेकिन अपने अंदर वे इस प्रकार की बातों की पहचान नहीं कर पाते हैं। कुरिंथुस में पौलुस के विरोधियों ने मसीह के प्रेरितों की शिक्षा प्राप्त करने और सुनने से इंकार किया। वे उन युवाओं के समान थे जो यह सोचते हैं कि प्रेम और विवाह के बारे में वे अपने दादा से जिनका विवाह पैसंठ वर्ष से एक ही महिला से हुआ है, से अधिक जानते हैं। विनम्रता वह गुण है जो हम उनसे सीखते हैं जो हमसे पहले चले गए हैं।

अहंकार वह मनोस्थिति है जो किसी के व्यक्तिगत् पसंद या निर्णय का अनियमित मूल्य निर्धारण करता है। जिसमें आत्मविश्वास आपे से बाहर चला जाता है। अहंकार उस घमण्ड की उपज है जिसने प्रथम स्त्री और पुरूष को परमेश्वर की आज्ञा मानने से रोका और इसके प्रभाव में आकर कहा, "मैं जानता हूँ तू क्या चाहता है, लेकिन मैं इसे अपने तरीके से करूँगा।" इसके विपरीत, विनम्रता, किसी के स्वाभिमान पर प्रश्न उठाता है और दूसरों का सम्मान करता है। जो मसीह को प्रभु मानते हैं वे विनम्रता को एक गुण मानते हैं। पाँचवीं सदी में, अगस्तीन ने बुद्धि कैसे प्राप्त किया जाए, पर यह मत दियाः "सबसे पहला मार्ग विनम्रता है; दूसरा मार्ग विनम्रता है, और तीसरा मार्ग विनम्रता है, और जितनी बार आप पूछोगे, मैं यही कहूँगा।"[12]

नम्र होने का तात्पर्य वास्तविक रूप से अपना मूल्यांकन करना है, और यह कोई छोटी बात नहीं है। जिस प्रकार यूरियाह हीप के *डेविड कॉपरफील्ड* में दर्शाया गया है उस तरह किसी को आत्म-निंदा करने की आवश्यकता नहीं है, जिसमें उसने अपने आपको "सबसे नम्र व्यक्ति" के रूप में प्रस्तुत किया है।[13] सच्ची विनम्रता यीशु का शिष्यों के पैर धोने में है। यह प्रभु के बाहों में एक बच्चा है। यह पौलुस है जिसको "मृत्युदण्ड दिया गया" जो इस "संसार के लिए तमाशा बना" (4:9)। यह यिर्मयाह है, जो भविष्यवक्ता की सेवा के प्रति असहज और भ्रांति की स्थिति में है, परंतु प्रचार करने के निर्णय से अडिग है। यह अय्यूब है जो पीड़ा और प्रश्नों से जूझ रहा है, परंतु अभी भी उसका भरोसा परमेश्वर पर है। विनम्रता, सेवा करना है, भरोसा रखना है, और बिना किसी दिखावे के देना है। कुरिंथुस में पौलुस के विरोधियों ने अपने आपको परमेश्वर के हाथों में सौंपने के बजाय अपनी उन्नति को अधिक प्राथमिकता दी। उस भक्तिहीन मानसिकता के साथ, उन्होंने कलीसिया में अव्यवस्था और भ्रांति को बढ़ावा दिया।

समाप्ति नोट्स

[1]इस शब्द की व्युत्पत्ति "युद्ध के अन्तर्गत" अर्थात "ट्रिरीम" कहलाने वाला एक यूनानी युद्ध जहाज़ के निचले भाग में से युद्ध करने वाला, में देखी जा सकती है; फिर भी यह सन्देहपूर्ण है कि

पौलुस अपने काम की तुलना “युद्ध के अन्तर्गत” के रुप में करता हो। (कार्ल एच. रेंग्सटोर्फ़, “ὑπηρέτης,” इन *थियोलॉजिकल डिक्श्नरी आफ द न्यू टेस्टामेंट*, एड. गेरहार्ड फ़्रेडरिक, ट्रांस. ऐन्ड एड. जिओफ़्रे डब्ल्यू. ब्रोमिली [ग्रान्ड रेपिड्स, मिश.: विम. बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1972], 8:533.) [2]बेन विदरिंगटन III, *कनफ़्लिक्ट ऐन्ड कम्युनिटी इन कोरिन्थ: अ सोशियो-रिटोरिकल कमेन्ट्री ऑन 1 ऐन्ड 2 कोरिन्थियन्स* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिश.: विम. बी. अर्डमेन्स पब्लिशिंग कं, 1995), 137. [3]यह शब्द यूनानी शब्द ἔσχατος (*एस्खटोस*), से आता है जिसका अर्थ है “अन्तिम,” अतः इसका अर्थ है अन्तिम समय का अध्ययन। [4]वॉल्टर बौअर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लेक्सिकन ऑफ़ द नयु टेस्टामेन्ट ऐन्ड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर*, 3थर्ड ऐड., रेव. ऐन्ड एड. फ़्रेडरिक विलियम डेन्कर (शिकागो: युनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस, 2000), 642. [5]फ़ी के समान रखा गया, 171. [6]इस स्थिति का एक सहायक सारांश एन्थोनी सी. थीस्लटन, “रिअलाइज़्ड एस्केटोलॉजी एट कोरिन्थ,” *न्यु टेस्टामेन्ट स्टडीज़* 24 (जुलाई 1978): 510-26 में दिया गया है। [7]वे लोग मानवीय परिश्रम को श्राप और पीड़ा के रुप में देखते थे; वे यह मानते थे कि यह मात्र गुलामों के लिए था। (रौजर बी. हिल, “हिस्टोरिकल कोन्टक्स्ट ऑफ़ द वर्क एथिक,” 1999, 2 जुलाई, 2015 को पहुँच बनाई गई, workethic.coe.uga.edu/historypdf.pdf.) [8]डोनाल्ड ए. कार्सन, *फ़्रॉम टायम्फ़लिज़्म टू मेच्योरिटी: एन एक्सपोज़िशन ऑफ़ 2 कोरिन्थियन्स 10-13* (ग्रान्ड रेपिड्स, मिश.: बेकर बुक हाऊस, 1984), 2. [9]लियोन मौरिस, *द फर्स्ट इपिस्टल आप पॉल टू द कुरिंथियंस*, संशोधित संस्करण, द टिंडेल न्यू टेस्टामेंट कमेंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशीगनः विलियम बी. एर्डमैंस पब्लिशिंग कम्पनी, 1985), 82. [10]थॉमस हार्डी, *द मेयर आफ कास्टरब्रिज*, नया संस्करण (लंदनः सैम्पसन, मार्सटन, सर्ले, एण्ड रिविंगटन, 1887), 309.

[11]जेम्स मोण्टगोमरी बॉइस, “एक्सपोजीशन आफ इंटरटेनमेंट,” *लीडरशीप* 14 (स्प्रिंग 1993): 27. [12]अगस्तीन *लेटर्स* 118.22. [13]चार्ल्स डिकंस, *डेविड कॉपरफील्ड*, द वर्क्स आफ डेविड कॉपरफील्ड, खण्ड 14 (न्यू यॉर्कः चार्ल्स स्क्राबनर्स सन्स, 1899), 280.